ग्यारहवाँ अध्याय

श्रीमैत्रेय उवाच

यदेतद्भगवानाह गणः सप्तविधो रवेः। मण्डले हिमतापादेः कारणं तन्मया श्रुतम्॥१॥
व्यापारश्चापि कथितो गन्धर्वोरगरक्षसाम्। ऋषीणां बालखिल्यानां तथैवाप्सरसां गुरो॥२॥
यक्षाणां च रथे भानोर्विष्णुशक्तिधृतात्मनाम्। किं चादित्यस्य यत्कर्मतन्नात्रोक्तं त्वया मुने॥३॥
यदि सप्तगणो वारि हिममुष्णं च वर्षति। तत्किमत्र रवेर्येन वृष्टिः सूर्यादितीर्यते॥४॥
विवस्वानुदितो मध्येयात्यस्तमिति किं जनः। ब्रवीत्येतत्समं कर्म यदि सप्तगणस्य तत्॥५॥

श्रीपराशर उवाच

मैत्रेय श्रूयतामेतद्यद्भवान्परिपृच्छति। यथा सप्तगणेऽप्येकः प्राधान्येनाधिको रविः॥६॥
सर्वशक्तिः परा विष्णोर्ऋग्यजुः सामसंज्ञिता। सैषा त्रयी तपत्यंहो जगतश्च हिनस्ति या॥७॥
सैष विष्णुः स्थितः स्थित्यां जगतः पालनोद्यतः। ऋग्यजुः सामभूतोऽन्तः सवितुर्द्विज तिष्ठति॥८॥
मासि मासि रविर्यो यस्तत्र तत्र हि सा परा। त्रयीमयी विष्णुशक्तिरवस्थानं करोति वै॥९॥
ऋचः स्तुवन्ति पूर्वाह्णे मध्याह्नेऽथ यजूंषि वै। बृहद्रथन्तरादीनि सामान्यह्नः क्षये रविम्॥१०॥
अङ्गमेषा त्रयी विष्णोर्ऋग्यजुः सामसंज्ञिता। विष्णुशाक्तिरवस्थानं सदादित्ये करोति सा॥११॥
न केवलं रवेः शक्तिर्वैष्णवी सा त्रयीमयी। ब्रह्माथ पुरुषो रुद्रस्त्रयमेतत्त्रयीमयम्॥१२॥
सर्गादौ ऋङ्मयो ब्रह्मा स्थितौ विष्णुर्यजुर्मयः। रुद्रः साममयोऽन्ताय तस्मात्तस्याशुचिर्ध्वनिः॥१३॥

सूर्यशक्ति और वैष्णवीशक्ति का वर्णन

श्रीमैत्रेय महर्षि ने कहा— हे भगवन् ! आपने यह जो कहा है कि इन सातों का गण ही हिम, ताप और
वर्षा का कारण बनता है उसे तो मैंने सुन लिया ॥१॥ हे गुरो ! उन गन्धर्वों, सर्पों, राक्षसों, बालखिल्य ऋषियों,
अप्सराओं तथा यक्षों में जो विष्णु भगवान् की शक्ति से तेजोमय होकर सूर्य के रथ में विद्यमान रहते हैं, उनका
व्यापार भी आपने बतलाया है । किन्तु सूर्य का कौन सा कार्य है ? इस बात को आपने नहीं बतलाया है ॥२-३॥
यदि इन सातों का गण ही शीत, उष्ण और वर्षा का कारण है, तो फिर सूर्य क्या करते हैं ? कि यह कहा जाता
है कि सूर्य वर्षा करते हैं ॥४॥ यदि ये सातो ही इन कर्मों को करते हैं, तो फिर यह क्यों कहा जाता है कि सूर्य
उदित हुआ, सूर्य मध्य में है, और सूर्य अस्त होते हैं ?॥५॥ **श्रीपराशर महर्षि ने कहा—** हे मैत्रेय ! तुमने जो
पूछा है, उसका उत्तर सुनो । उन सातों के गणों में सूर्य भी एक है, किन्तु वे अन्यों की अपेक्षा प्रधान हैं ॥६॥
भगवान् विष्णु की जो सर्वशक्ति स्वरूपिणी ऋक् यजुः एवं साम शक्ति है, वही त्रयी शक्ति है । वही सूर्य को ताप
प्रदान करती है, और संसारी प्राणियों के संतापों को विनष्ट करती है ॥७॥ वे भगवान् विष्णु जगत् की स्थिति के
काल में जगत् का पालन करते हैं, वे सूर्य के भीतर उस समय ऋग् यजुः तथा साम रूप से निवास करते हैं ॥८॥
जिस महीनों में जो सूर्य रहते हैं, उन सबों के भीतर भगवान् विष्णु त्रयी रूप से स्थित रहते हैं ॥९॥ पूर्वाह्न में ऋक्,
सूर्य की स्तुति करती है, मध्याह्न में बृहद्रयन्तर आदि यजुष् और सायं काल में सामश्रुतियाँ सूर्य की स्तुति करती हैं॥१०॥
यह ऋग्, यजुः एवं सामशक्ति भगवान् विष्णु के अङ्ग है । यह विष्णु शक्ति आदित्य के भीतर सदा विद्यमान रहती
हैं॥११॥ यह त्रयी स्वरूपिणी विष्णु शक्ति केवल सूर्य ही शक्ति नहीं है अपितु ब्रह्मा तथा रुद्र भी त्रयीमय ही है॥१२॥
सृष्टि की आदि में ब्रह्मा ऋक् स्वरूप रहते हैं, स्थिति काल में विष्णु यजुर्मय रहते हैं और संहार काल में रुद्र साममय

एवं सा सात्त्विकी शक्तिर्वैष्णवी या त्रयीमयी। आत्मसप्तगणस्थं तं भास्वन्तमधितिष्ठति ॥१४॥
तया चाधिष्ठितः सोऽपि जाज्वलीति स्वरश्मिभिः । तमः समस्तजगतां नाशं नयति चाखिलम् ॥१५॥
स्तुवन्ति चैनं मुनयो गन्धर्वैर्गीयते पुरः। नृत्यन्त्योऽप्सरसो यान्ति तस्य चानु निशाचराः ॥१६॥
वहन्ति पन्नगा यक्षैः क्रियतेऽभीषुसङ्ग्रहः । बालखिल्यास्तथैवैनं परिवार्य समासते ॥१७॥
नोदेता नास्तमेता च कदाचिच्छक्तिरूपधृक् । विष्णुर्विष्णोः पृथक् तस्य गणस्सप्तविधोऽप्ययम् ॥१८॥
स्तम्भस्थदर्पणस्येव योऽयमासन्नतां गतः। छायादर्शनसंयोगं स तं प्राप्नोत्यथात्मनः ॥१९॥
एवं सा वैष्णवी शक्तिर्नैवापैति ततो द्विज। मासानुमासं भास्वन्तमध्यास्ते तत्र संस्थितम् ॥२०॥
पितृदेवमनुष्यादीन्स सदाप्याययन्प्रभुः। परिवर्तत्यहोरात्रकारणं सविता द्विज ॥२१॥
सूर्यरश्मिः सुषुम्णा यस्तर्पितस्तेन चन्द्रमाः। कृष्णपक्षेऽमरैः शश्वत्पीयते वै सुधामयः ॥२२॥
पीतं तं द्विकलं सोमं कृष्णपक्षक्षये द्विज। पिबन्ति पितरस्तेषां भास्करात्तर्पणं तथा ॥२३॥
आदत्ते रश्मिभिर्यन्तु क्षितिसंस्थं रसं रविः । तमुत्सृजति भूतानां पुष्ट्यर्थं सस्यवृद्धये ॥२४॥
तेन प्रीणात्यशेषाणि भूतानि भगवान्रविः। पितृदेवमनुष्यादीनेवमाप्याययत्यसौ ॥२५॥
पक्षतृप्तिं तु देवानां पितॄणां चैव मासिकीम्। शश्वत्तृप्तिं च मर्त्यानां मैत्रेयार्कः प्रयच्छति ॥२६॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे एकादशोऽध्यायः ॥११॥

रहते है । इसीलिए साम की ध्वनि अपवित्र मानी जाती है ॥१३॥ इस तरह से जो त्रयीस्वरूपिणी सात्त्विकी वैष्णवी शक्ति है, अपने सात के गणों में सूर्य में स्थित रहती है ॥१४॥ उस विष्णु शक्ति से अधिष्ठित सूर्य भी अपनी किरणों से प्रकाशित होते हैं और सम्पूर्ण जगत् के अन्धकार का नाश करते हैं ॥१५॥ मुनिजन सूर्य की स्तुति करते हैं, गन्धर्व उनका गान करते हैं, अप्सराएँ नृत्य करती हैं और राक्षस उनके पीछे-पीछे चलते हैं ॥१६॥ सर्प वहन करने का काम करते हैं, यक्षगण वागडोर संभालते है । बालखिल्य महर्षि इनको चारो ओर से घेरे रहते हैं ॥१७॥ त्रयी शक्तिमय भगवान् विष्णु का कभी भी न तो उदय होता है, और न तो वे अस्त होते हैं । सात प्रकार के गण तो उनसे पृथक् है ॥१८॥ जिस प्रकार स्तम्भ में लगे हुए दर्पण के सन्निकट में जो जाता है, उसको अपना ही प्रतिबिम्ब दिखने लगता है ॥१९॥ हे द्विज ! इसी प्रकार सूर्य देव से वैष्णवी शक्ति कभी दूर नहीं जाती है । वह प्रत्येक मास में सूर्य में स्थित रहती है ॥२०॥ हे द्विज ! दिन और रात्रि के कारणभूत भगवान् सूर्य पितृगण, देवगण एवं मनुष्य गण को सदा तृप्त करते रहते हैं ॥२१॥ सूर्य की सुषुम्णा नाम की रश्मि शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा का पोषण करती है, और कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा की अमृतमय एक-एक कला का पान देवगण करते रहते हैं ॥२२॥ कृष्णपक्ष की समाप्ति में चतुर्दशी को पीने से बचे हुए दो कलाओ का पान पितृगण करते हैं, इस तरह सूर्यदेव पितरों का आप्यायन करते हैं ॥२३॥ पृथिवी में विद्यमान जितने जल को सूर्य अपनी किरणों के द्वारा ग्रहण करते हैं, उसको जीवों की पुष्टि तथा सस्य की समृद्धि के लिए बरसा देते हैं ॥२४॥ अतएव इस प्रकार भगवान् सूर्य, पितृगण, देवगण तथा मनुष्य आदि समस्त जीवों को पुष्ट करने का काम करते हैं ॥२५॥ हे मैत्रेय ! इस प्रकार सूर्यदेव पितरों की पाक्षिकी, देवताओं की मासिकी और मनुष्य की प्रतिदिन तृप्ति करते हैं ॥२६॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के दूसरे अंश के ग्यारहवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥११॥